NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

अधिक उपज के लिए हरी खाद की खेती

एस शर्मा[1] और एस ठाकुर[2]

परिचय:

जैविक खाद द्वारा पौधों को केवल नाइट्रोजन ही प्राप्त नहीं होती, अपितु पौधों की वृद्धि के लिए लगभग सभी आवश्यक तत्व प्राप्त हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त यह खाद मिट्टी की भौतिक दशा को सुधार कर पौधों की अच्छी बढ़वार के लिए अनुकूल वातावरण उपस्तिथ कर देती है । इस खाद द्वारा मिट्टी में उपस्तिथ सूक्षम जीवाणु भी सक्रिय हो जाते हैं और वे पौधों को मिट्टी से अधिक मात्रा में भोजन उपलब्ध कराने लगते हैं। जैविक खाद में कुछ ऐसे पदार्थ भी होते हैं, जो पौधों की वृद्धि में ठीक उसी प्रकार सहायक होते हैं, जैसे मनुष्य और अन्य जानवरों की वृद्धि में हार्मोन सहायक होते हैं।

उपरोक्त सभी बातें पौधों के लिए लाभदायक हैं। इसी लिए जैविक खाद खेतों में डालने से फसल की उपज बढ़ जाती है और इसका प्रभाव कई वर्ष तक रहता है। अतः किसानों को चाहिए कि वे अपने खेतों में जैविक खाद का प्रयोग अवश्य करें। परन्तु अकसर यह पाया गया है कि किसान के पास जैविक खाद की भरी कमी रहती है क्योंकि गोबर को वह उपले बनाकर जला डालता है और कम्पोस्ट बनाना उसे आता नहीं। अतः जैविक खाद की पूर्ति के लिए हरी खाद देना ही एकमात्र सरल उपाय है।

हरी खाद यद्पि मिट्टी में जैविक पदार्थों की पूर्ति करती है और लाभदायक भी है। परन्तु इससे तभी लाभ हो सकता है जब इसे सही ढंग से खेतों में दिया जाए। अतः हरी खाद देते समय किसान को कुछ बातें ध्यान में रखनी चाहिए।

हरी खाद देने के लिए मूसला जड़ वाली, फलीदार, शीघ्र बढ़ने वाली और मुलायम तने व अधिक पत्तों वाली फसल चुननी चाहिए। क्यूंकि ऐसी फसल शीघ्र बढ़ कर तैयार हो जाएगी, मिट्टी में नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ाएगी और मिट्टी में दबाने पर शीघ्र गल सड़ जाएगी। ढैंचा, सनई, ग्वार, मूंग, मटर आदि फसलें इस काम के लिए अच्छी रहती हैं।

हरी खाद के लिए बोई गयी फसल को ऐसी अवस्था में मिटटी में दबाना चाहिए, जब

[1]चौधरी सरवन कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर-176215.
[2]एमएस स्वामीनाथन स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर शूलिनी विश्वविद्यालय सोलन-173229

उसमें काफी फलियां आ गयी हों और उसका तना मुलायम हो। सनई, ढैंचा, ग्वार आदि फसलें दो महीने में पलटने लायक हो जाती हैं।

हरी खाद को पलटने के पश्चात एक महीने तक मिटटी में दबा रहने देना चाहिए। इस कार्य के लिए पहले खेत में पाटा लगाया जाये, तब मिट्टी पलटने वाले भारी हल से उसे दबा देना चाहिए। एक मास पश्चात खेत की जुताई आरम्भ कर देनी चाहिए। हरी खाद को दबाने के बाद खेत में नमी की कमी न रहे , अन्यथा खाद भली प्रकार से नहीं गल सकेगी। यदि वर्षा की कमी रहे तो खेत की सिंचाई कर देनी चाहिए।

दूसरी आवश्यक बात यह है कि हरी खाद को पलटने और आगामी फसल बोने के बीच पर्याप्त समय मिलना चाहिए। क्यूंकि हरी खाद के लिए जोती गई फसल को सड़ने में काफी समय लगता है। सनई, ग्वार आदि के लिए उचित नमी मिलने पर यह समय लगभग आठ सप्ताह का होता है।

हरी खाद को गलाने का कार्य फफूंदी और जीवाणु करते हैं, जिनके लिए नमी और भोजन दोनों ही आवश्यक हैं। नमी की कमी होने पर इनकी क्रिया मंद पड़ जाती है और खाद अधगली रह जाती है, जिससे खेत में दीमक लगने का डर रहता है। यदि हरी खाद को सड़ने के लिए पूरा समय नहीं मिलता और अगली फसल शीघ्र बो दी जाती है तो बीजों का अंकुरण ठीक नहीं होगा। इसके अलावा उस खेत में घुलनशील पदार्थों का अभाव रहता है क्यूंकि वह भोजन तो सब हरी खाद को गलाने वाले जीवाणु खा जाते हैं। अतः अगर किसान इन सब बातों का ध्यान रखे तो हरी खाद के प्रयोग से अधिक उपज प्राप्त कर सकता है।